ੴ १ओअंकार सतिगुर प्रसादि ।।

भक्त नामदेव : जीवन और चिंतन

धर्म प्रचार कमेटी :

(शिरोमणि गु:प्र: कमेटी) श्री अमृतसर।

लेखक : प्रो. जसविंदर कौर

लॉंच करता :

क्रांतिकारी जगद् गुरू नानक देव चैरिटेबल ट्रस्ट, चण्डीगढ़

Lunched By : Jasbir Singh
9988160484, 62390-45985
0172- 2696891

Type Setting By :
Radhe Shyam Choudhary
98149-66882

नि:शुल्क सेवा : स्वयं पढ़े और अन्य लोगों को पढ़ाये।

Download Free

भक्त नामदेव : जीवन और चिंतन

श्री गुरु ग्रंथ साहिब की रचना भारत के धार्मिक साहित्य में अपना विलक्षण और अद्वितीय स्थान रखती है। इस ग्रंथ में विभिन्न प्रांतों, कालों, भाषाओं, बोलियों, जाति, धर्म, वर्ण और वर्ग के माने जाने वाले महापुरुषों की बाणी तथा विचारों की साम्यता के आधार पर, सम्मिलित की गई। श्री गुरु ग्रंथ साहिब संसार का एक मात्र ऐसा धर्म ग्रंथ है जिसमें अपने धर्म के संस्थापकों के अतिरिक्त अन्य धर्मों के महानुभावों की बाणी को भी स्थान प्राप्त है। यह कार्य स्वयं गुरु साहिबान ने किया। जिन भक्तों की बाणी को इस महान ग्रंथ में स्थान प्राप्त है उनमें भक्त नामदेव जी का नाम विशेष उल्लेखनीय है।

भक्त शिरोमणि नामदेव जी की कीर्ति सिर्फ महाराष्ट्र ही नहीं बल्कि समस्त भारत में फैली हुई है। उन्होंने मनुष्य मात्र के कल्याण और समस्त समाज के उद्धार के लिए अपनी बाणी का सृजन किया। उन्होंने जीवों को प्रेमा भक्ति के ऐसे मार्ग पर प्रशस्त करने का प्रयास किया जो सीधा और आसान था। उनका बतलाया यह प्रेम का यह है जिसमें कर्मकांडों और संकीर्णता को कोई स्थान प्राप्त नहीं है और जो समूह मानवों के कल्याण को ही आदर्श मानता है। इस प्रकार भक्त, प्रचारक, सुधारक और साहित्यकार के रूप में नामदेव जी को समाज में अद्वितीय स्थान प्राप्त है।

नामदेव जी के बारे में प्राचीनतम जानकारी अनंतदास जी की परचई में प्राप्त होती है जो 1588 ई: में **(नामदेव जी की मृत्यु के लगभग 200 साल बाद)** लिखी गई। भक्त जी के जन्म स्थान, जन्म काल और जीवन से संबंधित घटनाओं के बारे में विद्वान एकमत नहीं है। फिर भी अधिकतर विद्वान यह मानते हैं कि उनका जन्म 1270 ई: में, सितारा के समीप नरसी बामणी गाँव, महाराष्ट्र में हुआ और देहान्त 80 साल की आयु में सन् 1350 ई: में पंजाब के घुमाण गाँव में हुआ। जहाँ 2 माघ को भारी मेला लगता है।

नामदेव जी के पिता का नाम दामशेटी और माता जी का नाम गोनाबाई माना जाता है। उनके गुरु विशोबा खेचर तथा ज्ञानदेव थे। उनका विवाह गोबिंदशेटी की पुत्री राजाबाई के साथ हुआ और चार पुत्र तथा एक पुत्री का जन्म हुआ। यह भी मान्यता है कि नामदेव जी के परिवार की आर्थिक स्थिति बहुत कमज़ोर थी। शूद्र कुल में जन्म लेने के कारण उन्हें असमानता के कष्टों को सहना पड़ा।

भैरउ राग में नामदेव जी भगवान को उलाहना देते हैं कि हे प्रभु! तूने मुझे छीपे के घर क्यों पैदा किया। मुझे लोग नीच जाति का समझते हैं। मैं बड़े चाव से प्रभु के मन्दिर में आया था पर उच्च वर्ण के कहे जाने वाले लोगों ने मुझे भक्ति करते को, बांह पकड़ कर मन्दिर से बाहर निकाल दिया। मैं अपनी कंबली लेकर चल पड़ा और मन्दिर के पीछे जा बैठा। स्पष्ट है कि नामदेव जी के समय शूद्रों को मन्दिर में जाने का अधिकार प्राप्त नहीं था। नामदेव जी भी मन्दिर में जाकर भक्ति करने का उद्देश्य लेकर मन्दिर नहीं गये होंगे, वह तो यही संदेश देना चाहते थे कि भगवान को सभी भक्त, चाहे वह किसी भी जाति के हों, अति प्रिय हैं और वह उन्हें हर जगह प्राप्त होता है:

छीपे के घरि जनमु दैला गुर उपदेसु भैला ।।

संतह कै परसादि नामा हरि भेटुला ।। (गुरु ग्रंथ साहिब, पृष्ठ 486)

भैरउ राग में नामदेव जी के समय जबरदस्ती धर्म परिवर्तन के प्रचलन की बात भी सामने आती है। नामदेव जी वर्णन करते हैं कि बादशाह (**मुहम्मद बिन तुगलक**) ने मुझे कहा कि मैं तेरे प्रभु की शक्ति देखना चाहता हूँ। मेरी यह मरी हुई गाय जीवित कर दे, नहीं तो मैं अभी तुझे मार दूँगा। मैंने कहा कि ऐसा नहीं हो सकता। वही होता है जो प्रभु चाहता है। बादशाह ने आदेश दिया कि इस पर हाथी चढ़ा दिया जाए। चर्चा है कि नामदेव जी के माता जी रुदन करने लगे और नामदेव जी को राम-राम तजि खुदा-खुदा कहने को प्रोत्साहित करने लगे। बादशाह क्रोधित होने लगा क्योंकि नामदेव जी उसका कहना नहीं मान रहे थे और बादशाह सोच रहा था कि मुल्ला, काजी तो मेरी आज्ञा में चलते हैं और यह हिन्दू मेरा कहना नहीं मान रहा है। हिन्दुओं ने बादशाह को यह भी कहा कि चाहे जितनी धन-दौलत ले लीजिए पर नामदेव जी को छोड़ दीजिए। बादशाह ने कहा कि यदि मैं धर्म की जगह अर्थ को प्रधानता दूँगा तो नरक में जाऊँगा। नामदेव जी के पैरों में बेड़ियाँ डाल दी गई पर फिर भी वह ताल बजा बजा कर प्रभु के गीत गाते रहे। प्रभु ने उन्हें इस संकट से बचाया क्योंकि प्रभु भक्त-वत्सल हैं। प्रभु अपने भक्तों के कष्टों का निवारण करते हैं:

सुलतानु पूछै सुनु बे नामा ।।

देखउ राम तुम्हारे कामा ।। .....

बिसमिलि गऊ देहु जीवाइ ।। .....

मेरा कीआ कछू न होइ ।। .....

बादिसाहु चढ़िओ अहंकारि ।।

गज हसती दीनो चमकारि ।।

रुदनु करै नामे की माइ ।।

छोडि रामु की न भजहि खुदाइ ।।.....

न हउ तेरा पूंगड़ा न तू मेरी माइ ।।

पिंडु पड़ै तउ हरि गुन गाइ ।।

करै गजिंदु सुंड की चोट ।।

नामा उबरै हरि की ओट ।। (गुरु ग्रंथ साहिब, पृष्ठ 1165)

नामदेव जी के आगमन से पूर्व वैष्णत, शैव, योग, इस्लाम और सूफी मत समाज में प्रचलित थे। एक - एक देवता के नाम पर अनेक - अनेक मत प्रचलित थे। महाराष्ट्र में बारकरी मत का प्रभुत्व था। उस समय समाज में असमानता का बोलबाला था। चारों वर्णों में ऊँच - नीच की प्रधानता थी। शूद्र बहुत हेय जीवन व्यतीत कर रहे थे। उन्हें धार्मिक स्थानों में जाने तक की आज्ञा नहीं थी। इस तरह तेरहवीं सदी का भारत धार्मिक और सामाजिक दृष्टिकोण से पतन के धरातल में जा रहा था। राजनैतिक स्थिति भी बहुत बुरी थी। मुस्लमानों के आक्रमणों से हिन्दू राज्य मिट रहा था। मुस्लिम शासक गैर - मुस्लिम जनता पर अत्याचार करने में जरा भी संकोच नहीं कर रहे थे। जनता की आत्मा इस तरह कुचल दी गई थी कि उसकी कुरलाहट से सारा वातावरण भयभीत हो रहा था। इस समय जयदेव, रामानंद, कबीर, सुरदास ने भक्ति के आधार पर लोगों की आत्मा को ढाढ़स देने का प्रयत्न किया। महाराष्ट्र में ज्ञानदेव, एकनाथ, तुकाराम आदि भक्तों की सरिता से इस प्रदेश को सींचा। नामदेव जी ने तो महाराष्ट्र के साथ भारत के और भागों में भी भक्ति के प्रचार हित भ्रमण किया। उनकी बात भारत की जनता को समझ में आ सके उसके लिए उन्होंने जनसाधारण की भाषा में ही साहित्य का सृजन किया। नामदेव जी की रचनाओं में हमें अद्भुत साहित्यिक प्रतिभा के दर्शन होते हैं। उनकी बाणी में हमें तीक्ष्ण सूझ का साक्षात्कार होता है। उन्होंने अपनी कृतियों में अपने आस - पास के बिम्बों और उपमाओं को ही आधार बनाया।

प्रसिद्ध विद्वान डॉ. कालेवरट और प्रो. मुकुंद लाट के अनुसार नामदेव जी की बाणी के तीन प्रमुख स्रोत हैं: -

1. मराठी अभंग संग्रह, लगभग 180 पदे।
2. दादू पंथी पंचवाणी जिसमें भक्त दादू, कबीर, रैदास, हरदास और नामदेव (लगभग 130 पदे) की बाणी प्राप्त है।
3. श्री गुरु ग्रंथ साहिब में नामदेव जी के 61 पदे हैं। जिनमें से 25 पदे पंचवाणी में भी उपलब्ध है। 36 पदे ऐसे हैं जो गुरु ग्रंथ साहिब के अतिरिक्त और कहीं उपलब्ध नहीं हैं।

भक्त नामदेव जी की गुरु ग्रंथ साहिब में संग्रहित बाणी एक जगह एकत्रित नहीं है बल्कि 18 रागों में - गाउड़ी (1), आसा (5), गूजरी (2), सोरठि (3), धनासरी (5), टोडी (3), तिलंग (2), बिलावल (1), गौंड (7), रामकली (4), माली गउड़ा (3), मारू (1), भैरउ (12), बसंत (3), सारंग (3), मलार (2), कानड़ा (1) और प्रभाती (3) में संग्रहित हैं। इन 61 पदों में से 11 दो बंदों वाले, 12 तीन बंदों वाले, 31 चार बंदों वाले, 5 पाँच बंदों वाले, 1 नौं बंदों वाला और 1 अठाइस बंदों वाला पदा है। भक्त जी ने अपने संवेदन को बहुत अनुकूल शब्दावली में बड़े प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है। भाषा के पक्ष से देखने पर पता चलता है कि साधूकड़ी, मराठी, पंजाबी का मिला जुला रूप है। उर्दू, फारसी के शब्दों का भी प्रयोग हुआ है।

गुरु ग्रंथ साहिब के अध्ययन से स्पष्ट हो जाता है कि गुरु नानक देव जी और गुरु अमरदास जी के पास नामदेव जी की बाणी उपलब्ध थी। इसके लिए गुरु नानक देव जी व भक्त नामदेव जी की सोरठि राग की रचनाएँ ध्यान योग्य हैं। नामदेव जी लिखते हैं:

जब देखा तब गावा ।। तउ जन धीरजु पावा ।। (गुरु ग्रंथ साहिब, पृष्ठ 656)

गुरु नानक देव जी लिखते हैं :

जा तिसु भावा तद ही गावा ।। ता गावे का फलु पावा ।। (गुरु ग्रंथ साहिब, पृष्ठ 599)

प्रोफेसर साहिब सिंह जी इन पदों की एक जैसी चाल, बहुत सारे शब्दों की समानता, विचारों की समता के आधार पर इस निर्णय पर पहुँचते हैं कि नामदेव के विचार कुछ कठिन भाषा में हैं और गुरु नानक देव जी ने उन्हें सरल भाषा में व्यक्त किया है। नामदेव जी ने इशारे मात्र से वर्णन किया है कि मुझे प्रभु ने गुरु मिला दिया है। गुरु नानक देव जी और व्याख्या करते हुए कहते हैं सारी कृपा परमात्मा की ही हुई है तभी गुरु की प्राप्ति हुई है। निष्कर्ष यह कि जब गुरु नानक देव जी ने बाणी रची तो नामदेव जी की बाणी उनके पास उपलब्ध थी।

इसी प्रकार का एक और उदाहरण है भैरउ राग का, जिसमें नामदेव जी लिखते हैं:

मै बउरी मेरा रामु भतारु ।।

रचि रचि ता कउ करउ सिंगारु ।। (गुरु ग्रंथ साहिब, पृष्ठ 1164)

गुरु अमरदास जी इसी राग में कहते हैं :

मै कामणि मेरा कंतु करतारु ।।

जेहा कराए तेहा करी सीगारु ।। (गुरु ग्रंथ साहिब, पृष्ठ 1128)

दोनों पदों में शब्दों की समता के साथ-साथ विचारों की समानता भी है। नामदेव जी कहते हैं मुझे लोगों की निंदा-स्तुति की परवाह नहीं है। गुरू अमरदास जी कहते हैं कि निंदा-स्तुति की परवाह मुझे इसलिए नहीं है क्योंकि अब मुझे सब में प्रभु ही प्रभु दिखाई देता है। प्रत्यक्ष है गुरु अमरदास जी के पास नामदेव जी का उपरोक्त पदा मौजूद था जब वह अपनी रचना कर रहे थे।

12वीं से 17 वीं सदी तक के अवर्ण कहे जाने वाले जिन भक्तों की बाणी गुरु ग्रंथ साहिब में संग्रहित है उनमें से अधिकांश गुरु साहिबान के पूर्ववर्ती हैं। यह मान्यता है कि भक्तों की बाणी का संचय गुरू नानक देव जी ने ही कर दिया था। भाई गुरदास जी की पहली वार में यह संकेत है कि गुरु नानक देव जी अपने साथ एक पोथी रखते थे। कुछ विद्वानों का मत है कि इस पोथी में ही गुरु नानक देव जी ने अपनी यात्राओं के दौरान भक्त वाणी एकत्र की। 'पुरातन जन्मसाखी' के अनुसार गुरु नानक देव जी ने गुरु अंगद देव जी को जो पोथी दी उसमें भक्त वाणी संग्रहित हो सकती है। यह भी मान्यता है कि गोइंदवाल वाली पोथियों में भक्तवाणी संकलित थी। कुछ विद्वानों की मान्यता है कि गुरु अर्जुन देव जी ने प्रयत्न करके भक्तबाणी एकत्रित करवाई और बाणी के संपादन के समय उसे आदि ग्रंथ में संकलित किया। जहाँ कहीं किसी स्पष्टीकरण की आवश्यकता थी वहाँ उन्होंने अपना या किसी और गुरु जी का श्लोक भी शामिल कर दिया। गुरु ग्रंथ साहिब में भक्तों की बाणी नाम मात्र नहीं बल्कि पर्याप्त मात्रा में है।

गुरु साहिबान ने अपनी बाणी में जिन भक्तों की बाणी संकलित की उसके लिए सिर्फ विचारों की समता का मानदंड समक्ष रखा गया। बाणीकारों ने प्रभु-स्तुति, नाम-स्मरण, शुभ कर्म, कर्मकांडों का निषेध, जाति प्रथा की निन्दा आदि को अपना वर्ण्य विषय बनाया। बाणीकारों की रचनाओं का चयन किसी धर्म, जाति, वर्ग, वर्ण के आधार पर नहीं किया गया। विचारों की एकसारता ही समक्ष थी। सारी बाणी समान आदर की पात्र है। हम सारी बाणी के समक्ष सीस झुकाते हैं, हुक्म या वाक लेते हैं, गुरु रूप स्वीकार करते हैं। यही कारण है कि गुरु साहिब ने अपनी रचनाओं में भक्तों की प्रशंसा के गीत भी गाये। गुरु अमरदास जी सिरी राग में वर्णन करते हैं: -

नामा छीबा कबीरु जुोलाहा पूरे गुर ते गति पाई ॥ (गुरू ग्रंथ साहिब, पृष्ठ 67)

गुरु रामदास जी का सूही राग में कथन है :

नामदेअ प्रीति लगी हरि सेती लोकु छीपा कहै बुलाइ ॥

खत्री ब्राहमण पिठि दे छोडे हरि नामदेउ लीआ मुखि लाइ ॥ (गुरु ग्रंथ साहिब, पृष्ठ 733)

गुरु अर्जुन देव जी का बसंतु राग में फुरमान है :

कबीरि धिआइओ एक रंग ॥

नामदेव हरि जीउ बसहि संगि ॥ (गुरु ग्रंथ साहिब, पृष्ठ 1192)

बाणीकार गुरुओं और भक्तों की बाणी के प्रमुख विषय प्रभु-स्वरूप, प्रभु-प्राप्ति के साधन, जीव की प्रवृत्ति, नैतिक मूल्य आदि रहे। प्रभु-प्राप्ति के साधनों में कर्मकांड, व्रत, पूजा की निंदा की गई और नाम-स्मरण द्वारा प्राप्त प्रभु-कृपा पर ज़ोर दिया गयां जिनके लिए सच्चे गुरु की प्राप्ति को आवश्यकता माना गया। नैतिक मूल्यों में व्यक्तिगत नैतिकता के साथ-साथ सामाजिक नैतिकता की महत्ता को भी स्वीकार किया गया और जाति-पाति के भेदभाव के खंडन के साथ-साथ स्त्री-पुरुष की समता पर भी ज़ोर दिया गया। मनुष्य को दूसरों के अधिकारों के हनन से भी सुचेत किया गया।

नामदेव जी के समय में ब्राह्मण वर्ण अपने आप को श्रेष्ठ समझता था और स्वर्ग तथा मुक्ति प्राप्ति के लिए यज्ञ, व्रत आदि कर्मकांडों को व्यर्थ महत्ता दे रहा था। भक्त नामदेव जी रामकली राग में चर्चा करते हैं कि मुझे वेद, शास्त्र, पुराण आदि के गीत गाने की आवश्यकता नहीं है। इड़ा, पिंगला, सुखमना मेरे लिए व्यर्थ हैं। तीर्थो के दर्शन, उनमें स्नान का कोई लाभ नहीं है। असली अठसठ तीर्थ व्यक्ति की अपनी आत्मा में है। कोई शास्त्र निहित कर्म या प्राणायाम जीव को भवसागर पार कराने के समर्थ नहीं है :

इड़ा पिंगुला अउरु सुखमना पउनै बंधि रहागो ॥

चंदु सूरजु दुइ सम करि राखउ ब्रहम जोति मिलि जाउगो ॥

तीरथ देखि न जल महि पैसउ जीअ जंत न सतावउगो ।।

अठसठि तीरथ गुरु दिखाए घट ही भीतरि न्हाउगो ।। (गुरू ग्रंथ साहिब, पृष्ठ 973)

रामकली राग में ही चर्चा है कि काशी में उलटा लटक कर तप करने, तीर्थों पर शरीर त्यागने, आग में जल कर मरने, योग अभ्यास करने, अश्वमेघ यज्ञ करने, गुप्त सोना दान करने, कुंभ के मेले में गंगा या गोदावरी में स्थान करने, केदार में स्नान करने, गोमती नदी के किनारे हज़ार गायों को दान करने, करोड़ों बार तीर्थ स्नान करने या शरीर को हिमालय पर्वत की बर्फ में गला देने भाव हिमालय पर्वत पर समाधि लगा कर तप करने, हाथी, घोड़े, स्त्री, ज़मीन, अपने बराबर सोना दान करने का कोई लाभ नहीं। उपरोक्त सारे कार्य एक राम – नाम की बराबरी नहीं कर सकते :

बानारसी तपु करै उलटि तीरथ मरै अगनि दहै काइआ कलपु कीजै ।।

असुमेध जगु कीजै सोना गरभ दानु दीजै राम नाम सरि तऊ न पूजै ।।

छोडि छोडि रे पाखंडी मन कपटु न कीजै ।।

हरि का नामु नित नितहि लीजै ।।

गंगा जउ गोदावरी जाईऐ कुंभि जउ केदार न्हाईऐ

गोमती सहस गऊ दानु कीजै ।।

कोटि जउ तीरथ करै तनु जउ हिवाले गारै राम नाम सरि तऊ न पूजै ।।

असु दान गज़ दान सिहजा नारी भूमि दान ऐसो दानु नित नितहि कीजै ।।

आतम जउ निरमाइलु कीजै आप बराबरि कंचनु दीजै

राम नाम सरि तऊ न पूजै ।। (गुरु ग्रंथ साहिब, पृष्ठ 973)

प्रभु चरणों में लग कर यह समझ आती है कि तीर्थ, व्रत आदि व्यर्थ हैं। गुरु द्वारा समझाये मार्ग पर चलकर, प्रभ – स्मरण करके जीव शुभ कर्मों वाले और बुद्धिमान हो जाते हैं :

ऐकादसी ब्रतु रहै काहे कउ तीरथ जांई ।।

भनति नामदेउ सुक्रित सुमति भए ।।

गुरमति रामु कहि को को न बैकुंठि गए ।। (गुरु ग्रंथ साहिब, पृष्ठ 718)

गोंड राग में व्रत आदि कर्मों के साथ-साथ नामदेव जी ने यज्ञ करने, पिंड भराने, तीर्थ स्नान करने को भी व्यर्थ बताया है। यह कहा है कि यदि जीव तीर्थों पर पिंड भराये, काशी में असि नदी के किनारे रहता हो, चारे वेद उसे कंठस्थ हों, जिसका वह पाठ करता हो, ब्राह्मण वाले षट् कर्म भी करता हो तो यह लाभदायक नहीं हैं। मनुष्य को यह कार्य छोड़ देने चाहिये क्योंकि यह तो सिर्फ प्रभु से दूरियाँ ही बढ़ाते हैं। केवल प्रभु का नाम ही भवसागर पार करवाने वाला साधन है :

असुमेध जगने ।। तुला पुरख दाने ।।

प्राग इसनाने ।। तउ न पुजहि हर कीरति नामा ।।

अपुने रामहि भजु रे मन आलसीआ ।। 1 ।। रहाउ ।।

गइआ पिंडु भरता ।। बनारसि असि बसता ।।

मुखि बेद चतुर पड़ता ।। सगल धरम अछिता ।।

गुर गिआन इंद्री द्रिड़ता ।। खटु करम सहित रहता ।।

सिवा सकति संबादं ।। मन छोडि छोडि सगल भेदं ।।

सिमरि सिमरि गोबिंदं ।। भजु नामा तरसि भव सिंधं ।। (गुरु ग्रंथ साहिब, पृष्ठ 873)

नामदेव जी गोंड राग में ही समझाते हैं कि जो भैरों की अराधना करता है वह भूत बन जाता है, जो सीतला को पूजता है वह गधे की सवारी करता है, जो शिव जी की पूजा करता है वह बैल पर चढ़ता है, जो पार्वती की पूजा करता है वह भी आवागमन के चक्र में पड़ा रहता है, मुक्ति की प्राप्ति में भवानी भी कोई सहायता नहीं कर सकती। भवसागर पार कराने में देवी देवते भी सहायक नहीं होते, सिर्फ प्रभु-नाम ही मुक्तिदाता है :

भैरउ भूत सीतला धावै ।।

खर बाहनु उहु छारु उडावै ।।

हउ तउ एकु रमईआ लैहउ ।।

आन देव बदलावनि दैवहु ।। रहाउ ।।

सिव सिव करते जो नरु धिआवै ।।

बरद चढे डउरु ढमकावै ।।

महा माई की पूजा करै ॥

नर सै नारि होइ अउतरै ॥

तू कहीअत ही आदि भवानी ॥

मुकति की बरीआ कहा छपानी ॥

गुरमति राम नाम गहु मीता ॥

प्रणवै नामा इउ कहै गीता ॥ (गुरु ग्रंथ साहिब, पृष्ठ 874)

गायत्री का पाठ, शिव की अराधना, रामचन्द्र जी की पूजा भी मुक्ति नहीं दिलवा सकते। नामदेव जी चेतावनी देते हैं कि यह मत सोचो अल्लाह सिर्फ मस्जिद में ही विद्यमान है। उस प्रभु का स्मरण किया जाना चाहिए जिसका न कोई मन्दिर है न मस्जिद :

हिंदू अंन्हा तुरकु काणा ॥

दुहां ते गिआनी सिआणा ॥

हिंदू पूजै देहुरा मुसलमाणु मसीति ॥

नामे सोई सेविआ जह देहुरा न मसीति ॥ (गुरु ग्रंथ साहिब, पृष्ठ 875)

यदि कर्मकांड भवसागर पार नहीं करवा सकते तो फिर किस को साधन बनाया जाये? तिलंग राग में वर्णन किया है कि मुझ अज्ञानी के लिये नाम रूपी लाठी ही सहारा है। प्रभु हर जगह मौजूद है। प्रभु ही सब जानने वाला, देखने वाला भाव ज्ञानी है। जीव तो अज्ञान के अंधकार से ग्रस्त है जिसे नाम का ही सहारा है :

मै अंधुले की टेक तेरा नामु खुंदकारा ॥ (गुरु ग्रंथ साहिब, पृष्ठ 727)

जीवों की प्रवृत्ति के बारे में धनासरी राग में चर्चा करते हुए भक्त नामदेव जी कहते हैं कि मनुष्य जिस शरीर पर गर्व करता है वह नश्वर है :

काहे रे नर गरबु करत हहु बिनसि जाइ झूठी देही ॥ (गुरु ग्रंथ साहिब, पृष्ठ 692)

सारंग राग में वर्णन है कि जैसे मछली को यह सुध नहीं रहती कि जाल मेरी मृत्यु का कारण है उसी प्रकार अज्ञानी जीव सोने और स्त्री भाव अर्थ, काम के मोह में डूबा अपनी आत्मिक मौत को बुलावा देता है। जैसे मधु मक्खी के भाग्य में शहद नहीं, गाय के भाग्य में दूध नहीं उसी प्रकार अर्थ और काम के लोभी के भाग्य में उच्चतम मूल्य नहीं। सतिसंग और प्रभु-स्मरण ही जीवन-लक्ष्य प्राप्ति में जीव के सहायक हो सकते हैं :

काएं रे मन बिखिआ बन जाइ ॥

भूलौ रे ठगमूरी खाइ ॥.....

काम क्रोध त्रिसना अति जरै ॥

साधसंगति कबहू नही करै ॥

कहत नामदेउ ता ची आणि ॥

निरभै होइ भजीऐ भगवान ॥ (गुरु ग्रंथ साहिब, पृष्ठ 1252)

जीवों को अपनी इन्द्रियों को वश में करके, कामादि से बचकर, अपने गुरु की शरण में जाकर, माया का नाश करके, नाम अमृत के सरोवर को भरना चाहिए। इससे आवागमन से छुटकारा होता है, प्रभु की स्तुति में ध्यान लगाकर ही जीव अपनी आत्मा के वास्तविक स्वरूप को समझ सकता है। जो प्रभु-भक्ति करते हैं, उनके सभी प्रकार के भय दूर हो जाते हैं। दिखावे के भेष बनाकर बाहर भटकने से कोई लाभ नहीं।

परमात्मा की अराधना कैसी होनी चाहिए, का वर्णन करते हैं कि अगर मैं घड़ा लाकर मूर्ति को स्नान करवाता हूँ तो यह उचित नहीं है क्योंकि पानी जूठा है और पानी में कई प्रकार के जीव बसते हैं तथा उन जीवों में तो पहले ही प्रभु रहता है। अगर मैं फूल लेकर मूर्ति की पूजा करूँ तो वह भी परवान नहीं होगी। क्योंकि भवरों ने फूलों की सुगंध लेकर उन्हें जूठा कर दिया है और भंवरे में प्रभु पहले ही विद्यमान है। अगर मैं खीर बनाकर प्रभु-समक्ष अर्पण करूँ तो बछड़े ने पहले ही दूध जूठा कर दिया था और प्रभु तो पहले ही बछड़े में निवास करता है। मैं किसे नैवेद्य भेंट करूँ? ऊपर नीचे सब जगह परमात्मा ही परमात्मा है। कोई भी जगह परमात्मा से रिक्त नहीं है। सारी सृष्टि में प्रभु ही प्रभु है :

आनीले कुंभ भराईले ऊदक ठाकुर कउ इसनानु करउ ॥

बइआलीस लख जी जल महि होते बीठलु भैला काइ करउ ॥.....

ईभै बीठलु ऊभै बीठलु बीठल बिनु संसारु नही ॥

थान थनंतरि नामा प्रणवै पूरि रहिओ तूं सरब मही ॥ (गुरु ग्रंथ साहिब, पृष्ठ 485)

यहाँ ध्यान देने योग्य है कि भक्त नामदेव बीठल शब्द का प्रयोग परमात्मा के लिए करते हैं। गुरु अर्जुन देव जी ने भी अपनी बाणी में इस शब्द का प्रयोग किया है। दोनों ने इस का प्रयोग अगम, अगोचर प्रभु के लिये किया है।

भक्त नामदेव जी के अनुसार संसार में जीवों की स्थिति डाल पर बैठे पक्षियों जैसी है। जिन्होंने वहाँ स्थाई तौर पर नहीं रहना है। जीव को उसी स्थिति में रहना होता है जिसमें उसे प्रभु रखे। समय का कोई भेद नहीं पा सकता है। कभी जीव के पास अनंत स्वादिष्ट पदार्थ होते हैं और उसे वह भी अच्छे नहीं लगते और कभी जीव अन्न के

एक – एक टुकड़े के लिए तरसता है, कूड़े के ढेर में से अन्न ढूँढता है। जीव को परमात्मा की रज़ा में रहना चाहिये। कभी जीव घोड़े पर सवार होता है और कभी पैरों में पहनने को चप्पल भी नहीं होती। कभी प्रभु जीवों को सुन्दर, स्वच्छ बिछौने पर सुलाता है और कभी सोने के लिए पुआल तक नसीब नहीं होती: –

कबहू खीरि खाड घीउ न भावै ।।

कबहू घर घर टूक मगावै ।।

कबहू कूरनु चने बिनावै ।।.....

भनति नामदेउ इकु नामु निसतारै ।।

जिह गुरु मिलै तिह पारि उतारै ।। (गुरु ग्रंथ साहिब, पृष्ठ 1164)

जगत के प्रपंच को देखकर जीव समझने लगता है कि जीव और जगत का साथ सदा रहने वाला है। पर जीव को ध्यान रखना चाहिए कि यह पदार्थ उसी प्रकार के हैं जैसे स्वप्न के पदार्थ। जीव की यह गलती है कि उन्हें स्थायी समझ लेता है। जिस मनुष्य को परमात्मा सही सूझ प्रदान करता है, वह इस भ्रम में से निकल जाता है, उसके मन को तस्सली आ जाती है। अपने हृदय में विचार करके देख लो यह परमात्मा का रचा हुआ खेल है जिसमें हर वस्तु, हर स्थान में वह एक ही बसता है।

नामदेव जी की बाणी में इतिहास और मिथिहास के अनेकों उदाहरण जैसे – कुब्जा, बिदुर, सुदामा, उग्रसेन, अजामल, गनिका, मारकंडे, दुर्वासा, दुर्योधन, रावण, पुंडरक, कृष्ण, शिव, पार्वती, नारद, प्रहलाद, पूतना, द्रोपदी, कंस, देवकी के द्वारा जीवन के उच्च मूल्यों तक पहुँचने का मार्ग सुझाया गया है। पर इस स्मरण, भजन का तभी लाभ है यदि पहले अंदर से तृष्णाओं की अग्नि को शांत कर लिया हो। मन में मैल रखना और दिखावे के लिए समाधि लगाना उसी तरह है जैसे साँप केंचुली उतार देता है पर अंदर से ज़हर नहीं छोड़ता। बगुला पानी में ऐसे खड़ा होता है जैसे समाधि लगाई हो पर ध्यान शिकार में होता है : –

सापु कुंच छोडै बिखु नही छाडै ।।

उदक माहि जैसे बगु धिआनु माडै ।।

काहे कउ कीजै धिआनु जपंना ।।

जब ते सुधु नाही मनु अपना ।। (गुरु ग्रंथ साहिब, पृष्ठ 485)

नामदेव जी टोडी राग में वर्णन करते हैं कि विकार – ग्रस्त जीव प्रभु भजन द्वारा ही पवित्र होता है :

कउन को कलंकु रहिओ राम नामु लेत ही ।।

पतित पवित भए रामु कहत ही ।। (गुरु ग्रंथ साहिब, पृष्ठ 718)

प्रभु - नाम स्मरण ही महिमा करते हुए गउड़ी राग में चर्चा है कि हनुमान जी की सेना ने लंका तक पहुँचने के लिए समुद्र पर पुल बनाने के लिए जिन पत्थरों का प्रयोग किया उन पर प्रभु नाम लिखा होने के कारण वह पानी पर तैरने लगे। कुब्जा, अजामिल, बिदर, सुदामा, उग्रसेन को प्रभु - कृपा के कारण लाभ प्राप्त हुए। प्रभु तूने तो उन लोगों पर कृपा दृष्टि करके उन्हें मुक्त कर दिया जिन्होंने जप नहीं किया, तप नहीं किया, जिन की ऊँची कुल नहीं थी, अच्छे कर्म नहीं थे। फिर भला वह जीव मुक्त क्यों नहीं होंगे जो तेरे नाम का स्मरण करते हैं :

देवा पाहन तारीअले ।।

राम कहत जन कस न तरे ।। 1 ।। रहाउ ।।

तारीले गनिका बिनु रूप कुबिजा

बिआधि अजामलु तारीअले ।। ....

जप हीन तप हीन कुल हीन क्रम हीन

नामे के सुआमी तेऊ तरे ।। (गुरु ग्रंथ साहिब, पृष्ठ 345)

नामदेव जी ऊँची जाति का गर्व करने वालों को कहते हैं कि मैं नीच जाति का छीपा हूँ पर मुझे उसके लिए कोई शर्मिंदगी नहीं क्योंकि मैं अपनी जिव्हा से नाम का जाप कर रहा हूँ जिससे मौत के डर की फासी काटी जा रही है। भाव जिन्हें दुनिया नीच समझती है वह नाम के द्वारा अपना हृदय शुद्ध कर लेते हैं फिर उन्हें न दुनिया और न ही मृत्यु का भय सताता है।

नाम - स्मरण की उचित विधि की चर्चा नामदेव रचित रामकली राग की बाणी में उपलब्ध है। कहा गया है कि जैसे स्वर्णकार बातचीत करते समय भी अपना ध्यान कुठाली में पड़े सोने में ही रखता है: पतंग उड़ाने वाला साथियों से बातचीत करता है पर उसका ध्यान अपनी पतंग में ही होता है, पनिहारी अपनी सखियों संग बतियाती भी अपना ध्यान अपने घड़े में ही रखती है, गाय चारा चरती हुई भी अपना ध्यान बछड़े में ही रखती है, माता घर के कार्य करती है पर ध्यान उसका बच्चे में ही होता है। इसी प्रकार नाम - अभ्यासी को जीवन के सभी कार्य व्यवहार करते हुए भी अपना ध्यान प्रभु - स्मरण में ही रखना चाहिए :

आनीले कागदु काटीले गूडी आकास मधे भरमीअले ।।

पंच जना सिउ बात बतऊआ चीतु सु डोरी राखीअले ।।

मनु राम नामा बेधीअले ।।

जैसे कनिक कला चितु मांडीअले ।। 1 ।। रहाउ ।। (गुरु ग्रंथ साहिब, पृष्ठ 972)

राग सारंग में नामदेव जी कहते हैं कि जगत रूपी खेल प्रभु और जीव दोनों को इकट्ठा खेल है क्योंकि मालिक (प्रभु) के बिना सेवक का अस्तित्व नहीं और सेवक के होने से ही मालिक की प्रभुता बनती है। प्रभु स्वयं ही देवता, मन्दिर और जीवों को अपनी अराधना में लगाने वाला है। जैसे जल और तरंगें एक हैं उसी प्रकार प्रभु और जीव एक हैं। जीव का प्रेम-बंधन प्रभु को ऐसे बांध लेता है कि फिर प्रभु उससे मुक्त नहीं हो पाते। प्रभु, भक्त जीवों के गुणों में बंध जाता है। फिर भक्त प्रभु-रूप हो जाते हैं :

मेरी बांधी भगतु छडावै बांधै भगतु न छूटै मोहि ॥

एक समै मो कउ गहि बांधै तउ फुनि मो पै जबाबु न होइ ॥

(गुरु ग्रंथ साहिब, पृष्ठ 1252-53)

प्रभाती राग में उपलब्ध बाणी में कहा गया है कि परमात्मा संसार का मूल है। वह युगों से पूर्व भी था और हर युग में है। उस प्रभु के अनंत गुण हैं, वह सभी जीवों में एक रस व्याप्त है :-

आदि जुगादि जुगादि जुगो जुगु ता का अंतु न जानिआ ॥

सरब निरंतरि रामु रहिआ रवि ऐसा रूपु बखानिआ ॥ (गुरु ग्रंथ साहिब, पृष्ठ 1351)

जिस परमात्मा की कोई कुल नहीं जो सर्वव्यापक है उसी ने जगत का खेल रचा है। हरेक जीव के अंदर प्रभु ने अपनी आत्मा को गुप्त रखा है। सारे जीवों में विद्यमान ज्योति को मनुष्य जानता नहीं पर जीव जो करते हैं उसका ज्ञान प्रभु को होता है :

अकुल पुरख इकु चलितु उपाइआ ॥

घटि घटि अंतरि ब्रहमु लुकाइआ ॥

जीअ की जोति न जानै कोई ॥

तै मै कीआ सु मालूमु होई ॥ (गुरु ग्रंथ साहिब, पृष्ठ 1351)

प्रभु का वर्णन करना उतना ही कठिन है जितना गूँगे का स्वादिष्ट भोजन के स्वाद का वर्णन करना। प्रभु सब में व्याप्त है :

ऐसो बेढी बरनि न साकउ सभ अंतर सभ ठांई हो ॥

गूंगै महा अंम्रित रसु चाखिआ पूछे कहनु न जाई हो ॥ (गुरु ग्रंथ साहिब, पृष्ठ 657)

भैरउ राग में चर्चा है कि यदि सच्चा गुरु मिल जाए तो प्रभु भी मिल जाता है। जिस जीव को गुरु मिल जाता है वह भवसागर पार कर मुक्ति प्राप्त करता है। गुरु के बताये मार्ग पर चल कर जीव विकारों से मन को दूर कर लेता है, जीव का स्वभाव नाम जपने वाला हो जाता है :

भनति नामदेउ इकु नामु निसतारै ।।

जिह गुरु मिलै तिह पारि उतारै ।। (गुरु ग्रंथ साहिब, पृष्ठ 1164)

जो कामादि को वश में कर लेता है, उसकी वाणी मधुर हो जाती है, शरीर पवित्र हो जाता है, जीव अवर्णनीय प्रभु की ही कथा करता है। मनुष्य को यह ज्ञान हो जाता है कि प्रभु सर्वव्यापी है, उसकी आत्मिक अवस्था बहुत ऊँची हो जाती है। जीव दुनिया में रहता हुआ भी विरक्त रहता है, किसी की निन्दा नहीं करता, सब से प्रेम करता है। बिलावलु राग में चर्चा है कि मुझे सतिगुरु ने सफल जीवन वाला बना दिया है। अब मैं सारे दुःख भुलाकर सुख में लीन हो गया हूँ। मुझे सतिगुरु ने ज्ञान का ऐसा अंजन दिया है कि मुझे प्रभु भक्ति के बिना जीवन व्यर्थ लगता है :

गिआन अंजनु मो कउ गुरि दीना ।।

राम नाम बिनु जीवनु मन हीना ।। (गुरु ग्रंथ साहिब, पृष्ठ 858)

भैरउ राग में चर्चा है कि अगर किसी जीव में बाकी सारे गुण हों पर नाक न हो तो सुन्दर नहीं लगता। वैसे ही यदि किसी मनुष्य के पास धन, वैभव आदि हो पर वह नाम का सिमरन न करता हो तो वह किसी काम का नहीं। मेरा मन और तन प्रिय प्रभु के हैं। अब जगत चाहे मुझे बुरा कहे पर मुझे चिन्ता नहीं है। मैं प्रभु प्रेम में विहल हो गया हूँ। प्रभु से मिलने के लिए मैंने भक्ति को आधार बनाया है, वह भी गुरु की आज्ञा में रहने वाले भाग्यशाली को ही प्राप्त होती है :

जा के मसतकि लिखिओ करमा ।।

सो भजि परि है गुर की सरना ।।

कहत नामदेउ इहु बीचारु ।।

इन बिधि संतहु उतरहु पारि ।। (गुरु ग्रंथ साहिब, पृष्ठ 1165)

नामदेव जी कहते हैं मुझे प्रभु उसी प्रकार प्रिय हैं जैसे मारवाड़ देश को पानी, ऊठ को बेल, हिरन को ध्वनि, धरती को वर्षा, भंवरे को सुगंध, कोयल को आम, चकवी को सूर्य, हंस को मान सरोवर, स्त्री को पति, बालक को दूध, पपीहे को बादल, मछली को जल प्रिय हैं :

मारवाड़ि जैसे नीरु बालहा बेलि बालहा करहला ।।

जिउ कुरंक निसि नादु बालहा तिउ मेरै मनि रामईआ ।।

तेरा नामु रूड़ो रूपु रूड़ो अति रंगु रूड़ो मेरो रामईआ ।। रहाउ ।।

जिउ धरणी कउ इंद्र बालहा   कुसम बासु जैसे भवरला ।।

जिउ कोकिल कउ अंबु बालहा   तिउ मेरै मनि रामईआ ।। .....

साधिक सिध सगल मुनि चाहहि   बिरले काहू डीठुला ।।

सगल भवण तेरो नामु बालहा   तिउ नामे मनि बीठुला ।। (गुरु ग्रंथ साहिब, पृष्ठ 693)

संक्षेप में भक्त नामदेव जी का विचार है कि जो जीव इन्द्रियों को वश में कर लेते हैं वह कामादि से बचकर अपने गुरु की शरण जाकर, माया का नाश करके, नाम अमृत के सरोवर को भर लेते हैं। उनका आवागमन से छुटकारा होता है। प्रभु की स्तुति में ध्यान लगाकर अपने आप को शिक्षित किया जा सकता है। जो भक्ति करते हैं उनके सभी प्रकार के भय दूर हो जाते हैं। दिखावे के वेश बनाकर बाहर भटकने से कोई लाभ नहीं होता।

नामदेव बाणी में प्रेमा-भक्ति पर विशेष ज़ोर है। सच्चे भक्त को प्रभु मिल जाता है। नामदेव जी कहते हैं ऐसे मिलाप से जीवन सफल हो जाता है। जिसे परमात्मा प्राप्त हो जाता है उसे अनहत ध्वनि सुनाई देने लगती है। उसके अंदर सावन के महीने के बिना ही बादलों की गरजना सुनाई पड़ने लगती है, सदैव नाम रूपी बादलों की गरजना सुनाई पड़ने लगती है, सदैव नाम रूपी बादलों की वर्षा होती है। गुरु की शिक्षा और सतसंग से मन पवित्र हो जाता है। वह जीव वैसे ही मूल्यवान हो जाता है जैसे पारस के स्पर्श से लोहा सोना बन जाता है। वह प्रभु में वैसे ही आत्मसात हो जाता है जैसे घड़े का पानी तथा समुद्र का पानी मिलकर एक हो जाते हैं। जीव का अपने मूल के साथ स्थाई संबंध स्थापित हो जाता है जिस की प्राप्ति ही भक्त नामदेव व बाकी बाणीकारों की बाणी का परम उद्देश्य है और तब :

अणमड़िआ मंदलु बाजै ।।

बिनु सावण घनहरु गाजै ।।

बादल बिनु बरखा होई ।।

जउ ततु बिचारै कोई ।।

मो कउ मिलिओ रामु सनेही ।।

जिह मिलिऐ देह सुदेही ।। (गुरु ग्रंथ साहिब, पृष्ठ 657)

इस प्रकार नामदेव जी की बाणी के विश्लेषणात्मक अध्ययन के उपरांत सहजता से इस निर्णय पर पहुँचा जा सकता है कि गुरु ग्रंथ साहिब में गुरु साहिबान और भक्तों के विचारों की साम्यता स्पष्ट दृष्टिगोचर है। नामदेव जी की गुरु ग्रंथ साहिब में संकलित बाणी में उनके जिस चिन्तन के दर्शन होते हैं वह सर्व कल्याणकारी है। नामदेव जी के इसी चिंतन को ध्यान में रखते हुए गुरु साहिबान ने अपनी बाणी में उन्हें श्रद्धा सुमन भेंट किये और उनकी बाणी

को गुरु ग्रंथ साहिब में सम्मिलित किया। दलितों में चेतना जागृत करने के लिये गुरु ग्रंथ साहिब जो प्रेरणा देता है वह अदभुत और अमूल्य है। बाणीकारों के दर्शाये मार्ग पर चल कर ही समस्त विश्व में भ्रातृ – भाव उत्पन्न किया जा सकता है। विश्व में शांति स्थापना के लिये सह – अस्तित्व का होना अति आवश्यक है और गुरु ग्रंथ साहिब उसी का संदेश, बिना भेदभाव के समस्त मानवता को देता है।

नामदेअ प्रीति लगी हरि सेती
लोकु छीपा कहै बुलाइ ।।
खत्री ब्राहमण पिठि दे छोडे
हरि नामदेउ लीआ मुखि लाइ ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना–733)

• • • • •

मै अंधुले की टेक तेरा नामु खुंदकारा ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना–727)

• • • • •

आनीले कुंभ भराईले ऊदक
ठाकुर कउ इसनानु करउ ।।
बइआलीस लख जी जल महि होते
बीठलु भैला काइ करउ ।।1 ।।
ईभै बीठलु ऊभै बीठलु
बीठल बिनु संसारु नही ।।
थान थनंतरि नामा प्रणवै
पूरि रहिओ तूं सरब मही ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना–485)

यानी गुरू ग्रंथ साहिब।

प्रिये पाठकजनों आप के चरणों में विनम्र विनती है कि इस लघु पुस्तिका के अंत में एक वैब साईट का नाम **www.sikhworld.info** लिखा हुआ है यदि आप इस को खोलेगें तो आप इस के **Main Link** में एक उपन्यास **(Novel)** मित्र मण्डली पायेगें यह एक फौजी यथार्त घटना पर अधारित नावल है जो कि रोचकशैली में तो है ही इस के साथ ज्ञान वर्दक तथा मनोरंजन से भरपूर है जो आप की जिज्ञासा को तृप्त करेगा और आप आनंदित होंगे। अत: आप से निवेदन है कि इसे **Download** करके एक बार अवश्य पढ़े।

धन्यवाद

लेखक – जसबीर सिंघ

भेटा :- आप पढों तथा अन्य लोगों को पढ़ाऐ यदि चाहे तो आप इस पुस्तिक को छपवा कर निःशुल्क बटवा सकते हैं।

www.sikhworld.info

Donation : A/c HDFC : IFSC 0000450
04501570003814